Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

मैथिलीक प्रमुख कथाकारक कथामे दाम्पत्य-जीवन

श्रवण कुमार
शोधार्थी, मैथिली विभाग, ति0 मा0 भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

––––

‘‘जे भाषा आइ ‘मैथिली’ नामे जानल जाइत तकर उल्लेख सर्वप्रथम यूरोपीय विद्वान कोलब्रुक द्वारा 1801 ई.मे भेल छल। डा. ग्रियर्सनक अनुसार कोलब्रुक अपन संस्कृत तथा प्राकृत संबंधी अनुसंधानात्मक विनिबंधमे मैथिलीक बंगलाक संग संबंधपर विचार कयने छथि तथा ओही क्रममे ईहो लिखने छथि जे जँ मैथिली भाषाक प्रयोग साहित्यमे नहि होइत अछि तँ एहि संबंधमे विशेष लिखब अनावश्यक अछि। एकर पश्चात सिरामपुरक मिशनरी लोकनि अपन सोसाइटीक 1816 ई.क 67म मेमाआयरमे अन्य आर्यभाषा सभक संग तुलना करैत मैथिलीक उल्लेख कयने छथि। मैथिलीक दोसर नाम ‘तिरहुतिया’ सेहो भेटैत अछि। एकर उल्लेख सन् 1771 ई०क बेलिगतीकृत ‘अल्फाबेट्रुम ब्राह्मनिकम’क अम्दुजक भूमिकामे भेल अछि। एहिमे कतोक भाषाक संग तुरूतियन (Tourutians) अथवा ‘तिरहुति’क उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त फैलेन, हार्नले, केलोग तथा ग्रियर्सन सदृश भाषाशास्त्रक विद्वानलोकनिक स्वरचित ग्रंथ सभमे सेहो समय-समयपर एहि नाम सभक उल्लेख भेल अछि किन्तु एकर प्राचीनतम उल्लेख ‘आइने अकबरी’मे भेटैत अछि जतय लेखक एकरा एक टा पृथक भाषाक रुपमे स्वीकार कयने छथि। मिथिलामे मैथिली भाषाक हेतु सर्वप्रथम विद्यापति ‘देसिल बयना’ शब्दक प्रयोग कयलनि-

देसिल बयना सब जन मिट्ठा।
तँ तइसन जम्पओ अवहट्ठा ।।

हिनक पश्चात् 17 शताब्दी लोचन अपन रागतरंगिनीमे विद्यापति पदावलीक भाषाक हेतु ‘मिथिलापभ्रंश’ शब्दक प्रयोग कयने छथि-

देश्यामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया।
श्रीविद्यापति कवि निबद्धास्ता मैथिलीगीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।।’’[1]

SHISRRJ203513 | Received : 01 July 2019 | Accepted : 16 July 2019 | *July-August* 2019 [2 (4) : 72-78]

मैथिली भाषाक सभसँ प्राचीन उपलबध गद्य ग्रंथ थिक - कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक ‘वर्णरत्नाकर’। एहि ग्रंथमे मैथिली भाषाक प्राचीनतम स्वरूप देखबामे अबैत अछि। मैथिल लोक द्वारा कथा लिखल सर्वप्रथम संस्कृत ग्रंथ ‘पुरुष परीक्षा’ अछि जकर कथाकार छथि - कविकोकिल महाकवि विद्यापति। आधुनिक कालमे सबसँ पहिने कवीश्वर चंदा झा ‘पुरुष परीक्षा’कँ मैथिलीमे अनुवाद क कथाक स्वरूपसँ परिचय करओलनि। एकर बाद संस्कृत ग्रंथक आख्यायिका सभकँ मैथिलीमे अनुवाद करल जाय लागल। फेर दोसर भाषासँ सेहो मैथिलीमे अनुवाद करल जाय लागल जाहिमे ‘‘अंगरेजीसँ इसोपक नीतिकथा (दुइगोट), शेक्सपियरक ‘टेम्पेस्ट’क ‘कमला’, गोल्ड स्मिथक ‘बेकफिल्ड पादरी’ ओ जानशनक ‘राजकुमार रसेलस’ आदिक अनुवाद कएल रमानन्द ठाकुर, वैद्यनाथ चौधरी, डा. उमेशमिश्र, दीनानाथझा प्रभृति। तहिना बंगलासँ अनुदित भेल शिवनन्दन चौधरी द्वारा ‘कपालकुण्डला’ ओ ‘मृण्मयी’, काशीनाथझा द्वारा ‘मायाशंकर’, ‘युगलांगुरीय’ ओ ‘राजपूतजीवन संध्या’ ओ जीवछमिश्र द्वारा ‘विचित्र रहस्य’, छेदीझा द्वारा ‘महाराष्ट्र जीवन-प्रभात’ ओ ‘सीतावनवास’, सुमनजी द्वारा ‘दर्पचूर्ण’, ‘निष्कृति’ ओ ‘युगलांगुरीय’, भुवनजी द्वारा ‘विषवृक्ष’, श्रीव्यास जी द्वारा ‘बाभनकबेटी’ आदि आदि।’’[2]

‘‘1930 ई.क पूर्वक गल्पसाहित्य अछि मुख्यतः प्राचीन रीतिक- अधिकांश संस्कृतकथाक अनुवाद वा स्वतंत्र रूपेण रचित ताही प्रकारक कथा। जकरा आधुनिक रीतिक कथा कहैत छिऐक, तकरहु तत्व यत्किंचित् 1930 ई.क पूर्वक कथासभमे भेटैत अछि। वस्तुतः उपन्यासक अतिरिक्त आन जे कथासाहित्य मैथिलीमे अछि, से आधुनिक गल्पक पूर्व-रूप कहल जा सकैत अछि आओर ओहि मध्य आधुनिक गल्पक मुख्य-मुख्य गुण भेटैत अछि यथा- कुतूहलता, विविधता, अद्भूतता, रोमांटिक भावना प्रभृति। आगाँ कथामे उपदेशात्मकताक बीज बेशी स्फूट भेल तथा अधिकांश गल्पक निकटक वस्तु छल हास्याव्यंग्यमूलक लोककथा, मुख्यतः गोनूझाक हास्यकथा, जकरा श्री नगेन्द्रकुमरक पिता कुशेश्वरकुमर संकलित कएल ‘गोनूविनोद’क नामसँ। वीरबलक कथा सेहो एहि शताब्दीक तीन-चारि दशक धरि बेस कहल-सुनल जाइत छल।”[3]

मैथिलीक प्रमुख कथाकारमे हरिमोहन झा, किरण जी, मनमोहन झा, योगानंद झा, व्यास जी आदिक नाम आदरक संग लेल जाइत अछि। ई लोकनि मैथिली कथाकँ नव दिशा आ गति देबामे अपन महत्वपूर्ण योगदान देने छथि। मानव-जीवनकँ गंभीर रुपसँ अध्ययन क’ अपन-अपन कथामे चित्रण करलाह अछि। दाम्पत्य-जीवनक विभिन्न क्षणक बड मार्मिक, हृदय-स्पर्शी अभिव्यक्ति अपन-अपन कथामे करलाह अछि।

हरिमोहन झाक कथामे दाम्पत्य-जीवन

हरिमोहन झाक “जन्म वैशाली जिलाक कुमर बाजितपुर गाममे 18 सितम्बर 1908 ई0कँ भेलनि। ई अत्यंत मेधावी छात्र छलाह तथा दर्शनशास्त्रमे एम. ए कऽ पहिने पटनाक बी. एन कॅालेज, पुनः पटना कॅालेज, तदान्तर पटना विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर विभागमे अध्यापन कयलनि। दर्शन-विभागाध्यक्षक पदसँ सेवा-निवृत्त भेलाक बादो पाँच वर्ष धरि विश्वविद्यालय-सेवा-आयोगक Research Professor रहलाह। हिनक निधन 23 फरवरी 1984कँ दरभंगामे भऽ गेलनि।

हिनक लेखन-कार्य कहियो रूकल नहि। मृत्युक समयसँ किछु दिन पूर्व धरि ई आत्मकथा लिखैत रहलाह जे पछति ‘जीवन यात्रा’क नामसँ प्रकाशित भेल। हिनक विशिष्ट मैथिली-सेवाक कारणेँ पटनाक मैथिल गोष्ठी द्वारा 1983 ई0मे एक गोट विशाल अभिनन्दन-ग्रंथ हिनका समर्पित कयल गेल अछि। दीर्घ आकरक 518 पृष्ठक ओहि अभिनन्दन-ग्रंथमे एकानबे रचनाकारक 106 गोट रचना संकलित अछि।

हिनक प्रकाशित कृति अछि- कन्यादान (1933), द्विरागमन (1943)- उपन्यास; प्रणम्य-देवता (1945), रंगशाला (1950)- कथा-संग्रह; खट्टर ककाक तरंग (1949)- व्यंग्य; चर्चरी (1960)- विविध; जीवन-यात्रा (1984)- आत्मकथा। एकर अतिरिक्त, संग्रहित असंग्रहित एगारह गोट बीछल कथाक संग्रह ‘एकादशी’क नामसँ सेहो प्रकाशित भेल अछि।”[4] हिनका मृत्युपरांत 1985 ई0मे भारतक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा ‘जीवन-यात्रा’ आत्मकथापर प्रदान करल गेल छलनि।

हरिमोहन झाक ‘पाँच-पत्र’ कथा दाम्पत्य-जीवनपर आधारित अछि। एहि कथाक नायक देवकृष्ण छथि आ नायिका हुनक प्राणेश्वरी। एहि कथाक नायक आ नायिकाक दाम्पत्य-जीवन सभ दिन विरहेमे बितलनि। बीच-बीचमे कहियो काल क मिलन होइत छलनि। नायक परदेशमे नोकरी करैत छलथिन। अर्थाभावमे जीवन बितैत छलनि। ‘आमदनी अठन्नी आ खर्चा रुपैया’ बाला बात छलनि।

दाम्पत्य-जीवनक प्रारम्भमे नायककँ नायिकाक प्रति अति आकर्षण छलनि। एहि आकर्षणक कारणेँ समाजक नियमकँ तोड़बाक साहस सेहो करने छलाह। जखन दाम्पत्य-जीवनक प्रारंभ करने छलाह तखन कोनो नोकरी-चाकरी नहि करैत छलाह। पिताक खर्चसँ पढ़ाइ करैत छलाह आ पढ़ाइक खर्चमेसँ टाका बचा पत्नीक लेल चन्द्रहार कीनने छलाह, सेहो घरक लोकसँ नुका क’।

पत्नीक कुशल-समाचार बुझबाक लेल पत्र लिखैत छलथिन। ओहि पत्रक जबावक लेल की व्यवस्था करैत छलथिन, से देखल जाय- “एहि पत्रक जबाव फिरती डाकसँ देब तँ लिफाफक भीतर लिफाफ पठा रहल छी। पत्रोत्तर पठयबामे एको दिन विलम्ब नहि करब। हमरा एक-एक क्षण पहाड़ सन बिति रहल अछि”।[5]

प्राचीन कालमे पति-पत्नीक गुरू सेहो कहबैत छलाह। ई बात ‘पाँच पत्र’क पहिल पत्र पढ़लाक उत्तर ज्ञात होइत अछि। कोना कोन बात पत्रक माध्यमसँ सिखबैत छलाह, से देखल जाय- “चिट्ठी दोसराकेँ छोड़क हेतु नहि देब। अपने हाथसँ लगायब। रातिगरे आँचरमे नुकौने जायब आ जखन क्यो नहि रहैक तँ लेटर बाक्समे खसा देबैक।”[6]

‘पाँच-पत्र’मे पाँचो पत्र विभिन्न अवस्थाक अछि आ पाँचो पत्रमे परिस्थिति भिन्न अछि मुदा पाँचो पत्रमे एक टा बातक समानता अछि जे पति-पत्नी एक-दोसरासँ भिन्न छथि।

पहिल पत्रमे पत्नीसँ मिलबाक लेल जतेक आतुर छथि ओतेक आतुर अन्य चारू पत्रमे नहि बुझना जाइत अछि।

दोसर पत्रसँ बुझना जाइत अछि जे गाममे पति-पत्नीक बीच भरिपोख गप्पो नहि होइत छलैक कारण पत्नीक स्वास्थ्य ठीक नहि छनि, से बात पत्र द्वारा कहैत छथिन। देखल जाय किछु पाँती- “अहूँकेँ एहि बेर गामपर बहुत दुर्बल देखलहुँ। जीरकादि पाक बनाक’ सेवन करू। जड़कालमे देह नहि जुटत तँ दिन-दिन आर ह्रस्त भेल जायब। ओहिठाम दूध अठौना लेल करू। कमसँ कम पाव भरि नित्य पिउल करब।”[7]

दोसर पत्रसँ ईहो बुझना जाइत अछि जे कथा-नायिका गाममे रहैत छथिन अपन सासुक संग आ कथा-नायक कतहु अन्तः इस्कुलमे नोकरी करैत छथि मुदा आर्थिक स्थिति ओतेक सुदृढ़ नहि छनि जे परिवारकेँ संग रखताह। मन त छलनि मुदा सामर्थ्य नहि छलनि।

कांचीनाथ झा ‘किरण’क कथामे दाम्पत्य-जीवन

कांचीनाथ झा ‘किरण’क “हिनक जन्म 28 दिसम्बर 1906 ई0केँ भेलनि। ई धर्मपुर (पो0 लोहना रोड, जि0 दरभंगा)क निवासी थिकाह। छात्रावस्थामे ई काशी चल गेलाह। ओतऽसँ मैथिली आन्दोलनमे अप्रतिम योगदान देलनि। काशी हिन्दु विश्वविद्यालयमे जे मैथिलीक स्वीकृति भेल

जाहिमे हिनक भूमिका बड़ महत्वपूर्ण अछि। ई बहुत दिन धरि सरिसब उच्च विद्यालयमे शिक्षक तथा बादमे ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालयमे मैथिलीक यशस्वी प्रधाध्यापक रहलाह।"[8]

किरण जीकेँ मैथिल आ मैथिली साहित्य ई दुनू कहियो बिसरि नहि सकैत कारण विद्यापति पर्व समारोहकेँ गाम-गाम धरि पहुँचयबामे हिनक योगदान अति महत्वपूर्ण अछि। ई जेहने आन्दोलनकर्त्ता तहने साहित्य-सृजनकर्त्ता छलाह। "हिनक प्रकाशित अछि- चन्द्रग्रहण (1932)- लघु उपन्यास; विजेता विद्यापति (1972)- नाटक; अभिमन्यु बालोपयोगी; जय जन्मभूमि (1953)- एकांकी। कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरणक कवितावली, कतेक दिनक बाद (काव्य-संग्रह), पराशर (महाकाव्य), किरण निबंधावली (निबंध-संग्रह), वर्णरत्नाकरक काव्य शास्त्रीय अध्ययन (समीक्षा)। पराशरपर मृत्युपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।"[9]

किरण जीक 'मधुरिमनि' कथा दाम्पत्य-जीवनपर आधारित अछि। एहि कथाक नायक 'मोचन' आ नायिका 'मधुरमनि' अछि। एहि कथाक शीर्षक नायिकाक नामपर अछि। एहि कथाक नायिका तामस करयबाली अछि आ नायक पितमरू लोक। जल्दी तामस नहि उठैत छैक। नायिका "बड़ मेहनतिया-जँधगरि तेहने। भरि दिन एहि आंगन ओहि आंगन नाचिते रहै।"[10] नायक "दरबज्जापर बैसल-बैसल जौड़ बाँटल करय आ कखनो-कखनो बाड़ी-झाड़ीमे खुरपी ल' क' कमाय-कोड़य।"[11]

नायिका आ नायकमे कखनो मारि-पीट नहि होइत छलैक कारण दुनूक अपन-अपन विवशता रहैक। नायकक बाम हाथ सुखायल सन छलैक। बोनि-बुत्ता किछु करबाक सामर्थ्य नहि छलैक मुदा नायिका नायकपर बाजिये भूकि क' मारि पेट आगरह क' क' खुअबैत छलैक। दुनूमे बड्ड सिनेह छलैक।

एहि कथामे दाम्पत्य-जीवनक कटू-मधु क्षणक कथा कहल गेल अछि। मधुरिमनि आ मोचनक दाम्पत्य-जीवन कष्टमय जीवनमे सुखक खोज करैत देखाइत अछि। एक दिस नायिकाक बात सुनबाक हिस्स पड़ि गेल छलैक मुदा एक दिन नायिकाक बात सुनि, रुसि क, नायिकाकेँ बिनु कहने घर छोड़ि कलकत्ता जयबाक लेल विदा भ' गेल छलैक।

एहि कथामे एक टा दोसरो दाम्पत्य-जीवनक झलक भेटैत अछि आ ओ अछि सतना मायक दाम्पत्य-जीवन। सतना मायक दाम्पत्य-जीवन भिन्न छलैक कारण सतना मायक दाम्पत्य-जीवनमे सतना छलैक जे मोचन-मधुरमनिक दाम्पत्य-जीवनमे नहि छलैक। दोसर जे मधुरमनिकेँ

मोचन कहियो एक चाट नहि मारलकैक आ “सतना-माइकेँ बुढारियोमे बड़ मारैत छलैक घरबाला।”[12]

मनमोहन झाक कथामे दाम्पत्य जीवन

मनमोहन झा सरिसब-पाही, मधुबनी निवासी छलाह। ई लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसब-पाहीमे अध्यापन करैत छलाह आ मैथिलीमे रचना करैत छलाह। हिनक प्रकाशित कृति सभ अछि- “अश्रुकण, वीर भोग्या, गंगापुत्र, कथायात्रा (कथा संग्रह), मिथिलाक निशापुर मे (गद्यकाव्य), संचयिता (सम्पादित) ।”[13] “बंगला कथाक कलात्मक भावुकताकेँ मैथिलीमे उत्कृष्ट रूप देबाक श्रेय श्री मनमोहन झाकेँ छनि। ‘रूना’, खिड़कीक गप्प’, ‘सुकेशी’, चम्पाकली, ‘सुवर्ण रेखाक तटपर’ आदि हिनक प्रसिद्ध कथा अछि। नव शिल्पक प्रयोग सेहो हिनक विशिष्टता रहल अछि, जे ‘बारह वर्ष बाद एक पत्र: एक प्रेरणा’ आदि कथामे देखल जा सकैत अछि। ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर लिखल गेल कथामे हिनक ‘मिनाक्षी’ एकटा उत्कृष्ट उदाहरण अछि।”[14]

‘झगड़ा’ कथामे ‘हम’ पात्रक बिआहक बादक कथा अछि। दाम्पत्य-जीवनमे प्रवेश करलाक बाद अधिकांश दिन हुनका झगड़ा निश्चित होइत छल। ई बात ओ स्वयं स्वीकार करैत कहैत छथि- “ओना तँ विवाहक बाद कोनो मास एहन नहि बीतल अछि- जाहिमे एक-दू दिन हुनकासँ झगड़ा नहि भेल हो, किन्तु कहियो-कहियो तँ लगातार दस दिन बीस दिन धरि झगड़ा होइते रहैत अछि। बात-बातमे मिलानो। कहिया कोन बात ल’ क’ झगड़ा भेल से यदि हमरा अखनो पूछब तँ समीचीन उत्तर द’ सकब की नहि ताहिमे संदेह अछि।”[15]

उपरोक्त पाँतीसँ बुझना जाइत अछि जे ‘झगड़ा’ कथाक नायक-नायिकाक बीच बेसी-काल झगड़ा होइते रहैत छल आ फेर मिलानो। पति-पत्नीमे झगड़ा होयबाक मुख्य कारण होइत अछि दुनूक विचारमे मिलान नहि होयब। अनावश्यक एक-दोसराकेँ अपना जकाँ बनयबाक प्रयास करब। दोसराक बातकेँ अनदेखी करब आदि।

एहि कथामे पति-पत्नीक बीच प्रेम, समर्पण आदि देखबामे अबैत अछि। एक-दोसराक विचारक टकराव सेहो देखबामे अबैत अछि। परिस्थिति एहन उत्पन्न होइत अछि जे दुनू दिस काज उपस्थित भ’ जाइत छैक आ दुनू दिस गेनाइ आवश्यक रहैत छैक मुदा पटना जायब दुनू काजमेसँ आवश्यक छलैक। नैहर जयबाक लेल ई आवश्यक त नहिये होइत छैक जे पति संगमे रहथि। पत्नीक हार्दिक इच्छा छलनि जे पतिक संगे नैहर जाथि मुदा ई संभव नहि छलैक कारण

हाइकोर्टमे तारीख छलैक। देखल जाय कथाकारक शब्दकेँ- “हमरा पटना अयबाक छल। हाइकोर्टमे एक मोकदमाक तारीख छल आ ओकर तीन दिनक बाद हुनक भाइक उपनयन छलनि। चारि रातिमेसँ एतबे बाग्युद्ध होइत छल जे हम पटना नहि जाइ आ हुनक संग हुनका गाम जाइ। ओत' ब्रह्माक भारा छल। हुनक विवाहक बाद हुनका ओतय इएह कुरतेबता होइ छल आ ताहिमे ओ नहि जाथि से हुनका असाध्य छलनि। जखन पटना विदा होयबा लय तैयार भ' हुनकासँ भेटँ कर' गेलहुँ तहुखन ओ इएह प्रश्न क' उठलीह- “की अहाँ हमर बात नहिए मानब?” हम कहलियनि- “अहाँ नहि बुझैत छिएक। मोकदमाबला बात थिकैक। यदि कनियो चूकि जायब, तँ जितबाक कोनोटा आशा नहि।” ओ कहल-“अहाँ एहिना हमरा गामक नामे लाथ ध' आन ठाम चल जाइत छी।” हम कहलियनि- “से अहाकँ हमरापर एतेक संदेह अछि तँ हम आदमी संग क' दैत छी। कल्हुके गाड़ीसँ तमोरिया चलि जाउ, किन्तु यदि अहाँक कोनो खगता रहितैक तँ नैहरेसँ लेब' अबितय ने।”[16]

संदर्भ संकेत

1. झा, डॉ. दिनेश कुमारः 2012; मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास; प्रकाशक- मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ संख्या -9, 10
2. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झाः 1991; मैथिली साहित्यक इतिहास; प्रकाशक - भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक, दरभंगा; पृष्ठ सं०- 337, 338
3. उपरोक्त, पृष्ठ सं०- 377
4. झा, डॉ. भीमनाथः 1985; परिचायिका; प्रकाशक- भवानी प्रकाशन, पटना; पृष्ठ सं.-92
5. सं.- पाठक, डॉ. अमरेश, भारद्वाज मोहनः 2007; कथा-संग्रह; प्रकाशक- मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ सं.- 7,8
6. उपरोक्त, पृष्ठ सं.-8
7. उपरोक्त, पृष्ठ सं.-81
8. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 8,9,10
9. झा, डॉ. भीमनाथः 1985; परिचायिका; प्रकाशक-भवानी प्रकाशन, पटना; पृष्ठ सं०-15
10. सं.- पाठक, डॉ. अमरेश, भारद्वाज मोहनः 2007; कथा-संग्रह; प्रकाशक- मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ सं.- 13
11. उपरोक्त पृष्ठ सं०-13
12. उपरोक्त पृष्ठ सं०-14
13. उपरोक्त पृष्ठ सं०-34
14. उपरोक्त पृष्ठ सं०-34
15. उपरोक्त पृष्ठ सं०-35

16[ए] उपरोक्त, पृष्ठ सं०-35, 36